~~8167~~
Received
5/12/2001

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्ष : २५ अंक : ८
नवम्बर २००१

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २५ अंक - ८, नवम्बर २००१

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

।। जैन भवन ।।

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	पल्लव और कदम्ब राजवंश	श्री कामता प्रसाद जैन	३७१
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	३८५
३.	मलयासुन्दरी		३८८

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय इन्द्रदूगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

पल्लव और कदम्ब राजवंश।

श्री. कामता प्रसाद जैन

कदम्ब वंश की उत्पत्ति – कदम्बों की उत्पत्ति के विषय में कुछ भी निश्चित नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस विषय में प्राचीन मान्यतायें अनुपलब्ध हैं। किन्तु यह स्पष्ट है कि कदम्बों के आदि पुरुष मुक्कण्ण ब्राह्मण वर्ण के वीर पुरुष थे। उपरांत के वर्णनों में इस वंश की उत्पत्ति शिव और पार्वती के सम्बन्ध से हुई बताई गई है और एक कथा में उन्हें नन्द राजाओं का उत्तराधिकारी लिखा है। परन्तु यह कथन विश्वसनीय नहीं है। वास्तव में कदम्ब वंश के राजा लोग कर्णाटक देश के अधिवासी थे और उनका गृहवृक्ष **(guardian tree)** ***कदम्ब*** *था, जिसके कारण वह* ***कदम्ब*** के नाम से प्रसिद्ध हुये थे। तामिल साहित्य में कदम्बों का मूलनाम ***नन्नन*** और उन्हें स्वर्णोत्पादक ***कोण्कानम्*** प्रदेश का राजा लिखा है। साथ ही तामिल ग्रन्थकार उनका उल्लेख ***कडम्बु*** नाम से करते है। अतः विद्वानों का अनुमान है कि इन्ही प्राचीन नन्नन कदम्बों से बनवासी के कदम्बराजाओं का सम्पर्क था। संभवत: उनकी उत्पत्ति इन्हीं नन्नन–कदम्बों में से हुई थी।

प्रारम्भ में कदम्ब वंश के राजागण वेदानुयायी ब्राह्मणों के भक्त थे। उन्होंने ब्राह्मण धर्म को उन्नत बनाने के लिये भरसक प्रयत्न किये थे।

मयूरशर्मा – संयुक्त प्रांतीय बरेली जिले के अहिच्छत्र स्थान से ब्राह्मणों को बुलाकर मुकुण्म कदम्ब ने कर्णाटक देश में बसाया था। मुकुण्ण के उत्तराधिकारी त्रिलोचन, मधुकेश्वर, मल्लिनाथ और चन्द्रवर्मा थे। चंद्रवर्मा का उत्तराधिकारी मयूरवर्मा था, जिसे मयूरशर्मा भी कहते थे। वस्तुतः मयूरशर्मा से ही कदम्ब वंश का ठीक इतिहास प्रारम्भ होता है। इसके द्वारा ही कदम्ब वंश का अभ्युदय विशेष हुआ था। इसी कारण उसे ही कदम्ब वंशका संस्थापक कहते हैं। मयूरशर्मा स्तनकुन्डुर अग्रहार से सम्बन्धित एक श्रद्धालु ब्राह्मण था। वह एक दफा अपने गुरु वीरशर्मा के साथ पल्लवराजधानी काच्ची में विद्याध्ययन करने के लिये गया। वहाँ एक

पल्लव सैनिक से उसकी तकरार हो गई; जिससे चिढ़कर उसने बदला चुकाने की ठान ली। मयूरशर्मा ने पल्लवों पर धावा बोल दिया और उनके सीमावर्ती प्रांतों पर अधिकार जमाकर वह श्री पर्वत (श्रीशैलम्) पर अड्डा जमाकर बैठ गया। उपरान्त उसने वाणवंशी एवं अन्य राजाओं को भी अपने आधीन किया था। चन्द्रवल्ली के शिलालेख से स्पष्ट है कि मयूरशर्मा ने त्रैकूट, अभीर, पल्लव, परियात्र, शकरस्थान, पुन्नाट, मन्करि और अन्य राजाओं को परास्त किया था। इस प्रकार अपना एकछत्र राज्य स्थापित करके मयूरशर्मा ने धूमधाम से राज्याभिषेकोत्सव मनाया था। उसका राज्यकाल सन् २६०–३०० ई० बताया जाता है।

कंगुवर्मा-भगीरथ और रघु – मयूरवर्मा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र कंगुवर्मा था। जिसने सन् ३००-३२५ ई० तक राज्य किया था। इसने भी कई एक लड़ाइयां लड़ी थीं। उसके पश्चात् उसका पुत्र भगीरथ (३२५-३४०) राज्याधिकारी हुआ था। इस राजा का शासनकाल संग्रामरहित शांति और समृद्धिपूर्ण था। इसकी ख्याति भी चहुं ओर थी। किन्तु इसका पुत्र रघु (३४०-३६०) संग्राम और विजयों के लीलाक्षेत्र में राजसिंहासनारुद्ध हुआ। उसके मुख पर शत्रुओं के अस्त्रप्रहारों के अनेक चिह्न विद्यमान थे। उसने अपनी विजयों द्वारा कदम्ब राज्य का विस्तार इतना बढ़ाया था कि वह अकेला उसका प्रबंध नहीं कर सका था। परिणामतः पलासिक में उसने अपने भाई काकुस्थको वायसराय नियुक्त किया था। रघु अपनी प्रजा का प्यारा था। शत्रु उसके नाम सुनते ही दहलते थे। वह वेदों का प्रकाण्ड विद्वान और एक प्रतिभाशाली कवि भी था।

काकुस्थवर्मा – रघु के पश्चात् काकुस्थवर्मा (३६०-३९० ई०) राजा हुआ था। कदम्बर राजाओं में वह महा बलवान था। अपने भाई रघु से उसे न केवल विस्तृत साम्राज्य ही उत्तराधिकार में मिला था, बल्कि सुप्रबन्धके लिये योग्य क्षमता भी उसने प्राप्त की थी। वह देखने में सुन्दर और अपने सम्बन्धियों को अति प्यारा था। वह राज्यशासन करना अपना धर्म और स्वर्ग प्राप्ति का एक कारण समझता था। उसके राज्यकाल में प्रजा समृद्धिशालिनी थी और कृषि की उन्नति हुई थी। काकुस्थ की महानता उसके विवाह सम्बन्धों से भी स्पष्ट है जो गुप्त सम्राट एवं अन्य बड़े-बड़े

राजाओं से हुए थे। उसने कई इमारतें और एक सुन्दर स्थम्भ भी बनवाया था; जिसपर काव्यमई संस्कृत –भाषा में एक लेख अंकित है।

शांतिवर्मा – महाराज काकुस्थवर्मा के दो पुत्र (१) शांतिवर्मा और (२) कृष्णवर्मा थे। शांतिवर्मा बड़े थे; इसलिये वह पहले युवराज पद पर आसीन रहे और बाद में राजा हुये। उन्होंने सन् ३९० से सन् ४२० ई० तक राज्य किया था। वह समग्र कर्णाटक देश के राजा और तीन मुकुटों के धारक कहे गये हैं; जिससे प्रकट है कि कदम्ब–साम्राज्य तीन भागों में विभक्त था एवं उसकी प्रथक्–प्रथक् तीन राजधानियां (१) बनवासी (२) उच्छशृग्डी (३) और पलासिका थीं। पलासिका में उसका भतीजा इनकी छत्रछाया में राज्य करता था।

मृगेशवर्मा – शांतिवर्मा के पश्चात् उसका पुत्र मृगेशवर्मा (सन् ४२०-४४५) सिंहासनारूढ़ हुआ था। वह एक महापराक्रमी शासक था और उसे संग्राम एवं सन्धि परिचालन में ही आनन्द आता था। कहते हैं कि वह पल्लवों के लिये बड़वानल और गंगो का ध्वंशक था। मृगेशने केकय राजकुमारी प्रभावती से विवाह करके अपनी शक्ति को बढ़ाया था और अपनी कन्या बाकाटक नरेश नरेन्द्रसेन को ब्याही थी।

रविवर्मा – मृगेशका पुत्र रविवर्मा अल्पायु में ही राज्याधिकारी हुआ। इसीलिये राजतंत्र की बागडोर उसके चाचा मानधातिवर्मा के आधीन रही थी। परन्तु अल्पकाल में ज्योंही रविवर्मा पूर्ण आयु को प्राप्त हुए कि उन्होंने राज्यशासनका भार अपने सुयोग्य कन्धोंपर उठाया और पूरी अर्द्धशताब्दि (४५०-५००) तक सानन्द राज्य किया। बनवासी के कदम्ब राजाओं में वही अन्तिम प्रभावशाली राजा था। उसका शासनकाल दीर्घ और समृद्धिपूर्ण था। रविवर्मा ने कई संग्राम लड़े थे और उनमें वह विजयी हुआ था। उसका चाचा विष्णुवर्मा जो पलासिक में राज्य करता था, उसके खिलाफ होकर पल्लवों से जा मिला था; परन्तु रविवर्मा ने उन सबको परास्त किया था। रविके हाथ से विष्णुवर्मा और कांची के चन्डदण्ड पल्लव तलवार के घाट उतरे थे। शासन प्रबन्ध में रवि के छोटे भाई भानुवर्मा ने उसका खूब ही हाथ बंटाया था। रवि सन् ५०० ई० में स्वर्गवासी हुआ था।

हरिवर्मा – उपरांत रविका पुत्र हरिवर्मा कदम्ब राजसिंहासन पर बैठा। हरिवर्मा का यह दावा था कि उसने जो भी धन सन्चय किया है वह न्यायोपार्जित है। अपने पारंपरिक जीवन में हरिवर्मा जैन धर्मानुयायी था, परन्तु अपने राज्यकाल के सातवें–आठवें वर्ष में वह ब्राह्मणमत में दीक्षित हो गया था। हरिके पश्चात् महाराज कृष्णवर्मा द्वितीय राजा हुआ; जिसने अश्वमेघ यज्ञ रचा था। खेद है कि इसी के अंतिम समय में कदम्ब साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया था। इसका पुत्र शोक और लज्जा के मारे साधु होकर चला गया था। और पल्लवों ने अपना झण्डा कदम्ब साम्राज्य के भव्य–खंडहर पर फहराया था।

कदम्ब वंश का पतन – उपरांत कृष्णवर्मा द्वितीय का उत्तराधिकारी अजवर्मा हुआ जरूर, परन्तु चालुक्यराज कीर्तिवर्मा ने उसे न कहीं का बना छोड़ा। अजवर्मा के पुत्र भोगिवर्मा ने अपने मुजविक्रमसे कदम्बों की लुप्त हुई श्री को पुनः प्राप्त करने का सदुपयोग किया उसमें वह किंचित् सफल भी हुआ; परन्तु गंग और चालुक्य वंश के राजाओं के समक्ष वह टिक न सका। चालुक्यराज पुलकेसिन् द्वितीयने सन् ६१२ ई० में वनवासीपर अधिकार जमाकर कदम्ब शक्ति का अन्त कर दिया।

कदम्बों की उपाधियां – कदम्ब राजघराने का सम्बन्ध काकुस्थ–अन्वय और मानव्यस गोत्र से था। ***स्वामी महासेन*** और ***मातृगण*** के अनुध्यानपूर्वक कदम्बराजा अभिषिक्त होते थे। यह स्वामी महासेन संभवतः कदम्ब वंश के कोई कुलगुरु थे। मातृगण से अभिप्राय उन स्वर्गीय माताओं के समूहक्क मालूम होता है, जिनकी संख्या कुछ लोग सात, कुछ आठ और कुछ और इससे भी अधिक मानते हैं। जान पड़ता है कि कदम्ब वंश के राजघराने में इन देवियों की भी बड़ी मान्यता थी। कदम्ब राजगण ***हारिती पुत्र*** भी कहलाते थे, जो संभवतः उनके घराने की कोई प्रसिद्ध और पूजनीया महिला थी। सिंह और बानर उनके ध्वजचिह्न थे, जो उनके सिक्कों पर भी मिलते हैं। कमलका चिह्न भी उनके द्वारा प्रयुक्त हुआ था। उनका अपना अनोखा बाजा था, जिसे ***पेरभक्ति*** कहते थे। उनके विरुद्ध ***"धर्म-महाराजाधिराज"*** और ***"प्रतिकृति–स्वाध्याय–चर्चा–पारा"*** थे। उन्होंने

राजत्व के आदर्श को प्रजाहित के लिये कुछ उठा न रख कर खूब ही निभाया था। अन्याय से धन संचय करने के वे विरुद्ध थे। प्रजा की शुभ कामनायें उनके साथ थीं।

कदम्बों की राजधानियां और शासन-प्रणाली — वनवासी कदम्बों की मुख्य राजधानी थी और बेलगांव जिले में एलासिक तथा चितरुदुर्ग जिले में उच्छशृडीः उनकी प्रांतीय राजधानियां थीं, जहाँ उनके वायसराय रहा करते थे। त्रिपर्वत नामक एक अन्य राजधानी का भी उल्लेख मिलता है। इन स्थानों पर राजकुल के पुरुष ही वायसराय होते थे। शासन व्यवस्था की सुविधा के लिये कदम्बों ने केंद्रीय शक्ति को कई विभागों में बांट दिया था। उनके लेखों में गृहसचिव, सचिव, प्रमुख-प्रबन्धक आदिका उल्लेख हुआ मिलता है। साम्राज्य को भी कदम्बों ने ***'मण्डलों'*** और ***'विषयों'*** में विभाजित कर दिया था, जिसके कारण राज्य का प्रबन्ध करने में सुविधा हो गई थी। अनेक ग्रामों का समूह ***'विषय'*** कहलाता था और कई विषयों का समुदाय एक ***'मण्डल'*** होता था। एक प्रांत के अन्तर्गत ऐसे कितने ही मण्डल होते थे, जिनपर एक वायसराय शासन करता था। दस मांडलिकों के ऊपर एक राजकुमार शासन और कर वसूल करने के लिये नियुक्त किया जाता था। प्रजापर ३२ प्रकार का कर लगाया जाता था; परन्तु ग्रामवासी इन सब ही प्रकार के करों से मुक्त थे। उनसे फसलकी उपजमें से दस प्रतिशत राज्यकर वसूल किया जाता था। भूमिका नाप-तोल लिखा जाता था और नापका परिमाण निवर्तन कहलाता था, जो राजा के पैर के बराबर होता था। अंनाज को तोलने का परिमाण ***खण्डुक*** कहा जाता था। यदि कोई ग्राम अथवा भूमि किसी धर्म–संस्था को भेट कर दी जाती थी, तो उसकी घोषणा आस-पास के ग्रामों में करा दी जाती थी और **सरकारी** कर्मचारीगण उस ग्राम में जाते भी नहीं थे। कदम्बों के सिक्के ***पद्मटंक*** कहलाते थे, जिनपर पद्म आदि पुष्प तथा सिंह आदि पशुओं के चित्र बने होते थे। कदम्बों ने अपने ही ढंग के सुन्दर मन्दिर और मनोहर मूर्तियां बनवाई थीं; जिनके नमूने हाल्सी में ***सप्रमातृक*** मूर्ति एवं बादामी आदि के मन्दिर हैं।

कदम्ब राजा और जैन धर्म – कदम्ब वंशी राजाओं के अभ्युदय काल में दक्षिण भारत में प्राचीन नागपूजा के अतिरिक्त ब्राह्मण, जैन और बौद्ध, यह तीनों ही आर्य धर्म प्रचलित थे। जनता में नागभक्तों के उपरांत सबसे अधिक संख्या जैनों की ही थी। प्राचीन चैर, पांड्य और पल्लव राजवंशों के प्रमुख पुरुष जैन धर्म के भक्त थे। उधर पूर्वीय मैसूर में गंगवंश के प्रायः सब ही राजाओं ने जैन धर्म को स्वीकार किया और आश्रय दिया था। किन्तु कदम्ब वंश के राजाओं ने प्रारम्भ में ब्राह्मण मत को उन्नत बनाने का उद्योग किया। उनमें से कई राजाओं ने हिंसक अश्वमेघ यज्ञ भी रचे थे; परन्तु उपरांत वह भी जैन धर्म की दयामय कल्याणकारी शिक्षा से प्रभावित हुए थे। मृगेश से हरिवर्मातक कदम्ब राजाओं ने जैन धर्म को आश्रय दिया था। मृगेशवर्मा का ग्राहस्थ जीवन समुदार था। उनकी दो रानियां थीं। प्रधान रानी जैन धर्मानुयायी थी, परन्तु दूसरी रानी प्रभावती ब्राह्मणों की अनन्य भक्त थी। मृगेश स्वयं जैन धर्मानुयायी थे। उन्होंने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में जिनेन्द्र के अभिषेक, उपलेपन, पूजन, भग्न संस्कार (मरम्मत) और महिमा (प्रभावना) कार्यों के लिये भूमिका दान किया थी। उस भूमि में एक निवर्तन भूमि खालिश पुष्पों के लिये निर्दिष्ट थी। मृगेशवर्मा का एक दूसरा दानपत्र भी मिलता है, जिसमें उन्हें ***धर्म महाराज श्री विजयशीव मृगेशवर्मा*** कहा है और जो उसके सेनापति नरवरका लिखाया हुआ है। इस दानपत्रद्वारा उन्होंने कालबंग नामक ग्राम अर्हत् पूजा आदि पुण्य कार्यों के लिये दान किया है।

मृगेशवर्मा का पुत्र रविवर्मा भी अपने पिता के समान जैन धर्म भक्त था। उनका एक दानपत्र हल्सी (बेलगांव) से मिला है और उसमें लिखा है कि :—

महाराज रवि ने यह अनुशासन पत्र महानगर पलासिक में स्थापित किया कि श्री जिनेन्द्र की पूर्णिमा को श्री अष्टाह्निकोत्सव, जो लगातार आठ दिनोंतक होता है, मनाया जाया करे; चातुर्मास के दिनों में साधुओं की वैयावृत्य किया जाया करे और विद्वज्जन उस महानता का उपयोग न्यायानुमोदित रूप में किया करें। विद्वत्मण्डल में श्री कुमारदत्त प्रधान हैं, जो अनेक शास्त्रों और सुभाषितों के पारगामी हैं, लोक में प्रख्यात हैं,

सच्चारित्र के आगार हैं, और जिनकी संप्रदाय सम्मान्य है। धर्मात्मा ग्रामवासियों और नागरिकों को निरन्तर जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करनी चाहिये। जहां जिनेन्द्र की पूजा सदैव की जाती है वहां उस देशकी अभिवृद्धि होती है, नगर आधि-व्याधि के भय से मुक्त रहते हैं और शासकगण शक्तिशाली होते हैं।

रविवर्मा का उक्त दानपत्र जैनधर्म में उनके दृढ़ श्रद्धान को प्रकट करता है। वह स्वयं श्रावक के दैनिक कर्म, जिनपूजा और दानका अभ्यास करते मिलते हैं और अपनी प्रजा को भी इस धर्म का पालन करने के लिये उत्साहित करते हैं। उनके समान धर्मात्मा शासकों के समय में जनता धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थों का समुचित पालन करके उनके सुमधुर फल का उपभोग करती थी। रविवर्मा का भाई भानुवर्मा भी जैनधर्म का परम – भक्त था। उन्होंने भी जिनेन्द्र के अभिषेक के लिये भूमिदान दिया था। जिससे प्रत्येक पूर्णिमा को अभिषेक हुआ करता था। भानुवर्मा के इस दानपत्र को उनके कृपा–पात्र पण्डर नामक भोजक ने लिखा था; जो अपने स्वामी के समान ही दृढ़ आर्हत–भक्त था। रविवर्मा का उत्तराधिकारी हरिवर्मा भी अपने प्रारम्भिक जीवन में जैनधर्म का श्रद्धालु था; परन्तु अपने अंतिम जीवन में वह शैव हो गया था। हरिवर्मा ने अपने चाचा शिवरथ के कहने पर हल्सी का दानपत्र लिखाया था, जिसके द्वारा उसने अच्छशृडीः में एक गांव कूर्चक संघ के श्री वारिषेणाचार्य को अर्हतपूजा के लिये प्रदान किया था तथा अहरिष्टि संघ के चन्द्रक्षांत आचार्य को भी भारद्वाज वंश के सेनापति सिंह के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मित अर्हत् मंदिर में अभिषेक करने के लिये भूमिदान दिया था। सेन्द्रकवंश के नृप भानुशक्ति के कहने पर हरिवर्मा ने एक और दानपत्र लिखा था, जिसके द्वारा उन्होंने श्रमणाचार्य श्री धर्मनन्दि को अर्हत् पूजा के लिये मारदे नामक ग्राम भेंट किया था। इस प्रकार उपर्युल्लिखित कदम्बवंशी राजाओं के शासनकाल में जैनधर्म अभ्युदय को प्राप्त हुआ था–परम अहिंसाधर्म सर्वत्र प्रसारित हुआ था, धर्म के नामपर पशुओं की निरर्थक हिंसा होना बन्द हो गई थी। सर्वत्र अहिंसा और सत्य धर्म का दिव्य आलोक व्याप्त था। जैनत्वकी मुहर राजा और

प्रजा के हृदयों पर लगी हुई थी। कदम्बों के राजकविगण जैनी थे और उनके व्यक्तिगत नाम भी जैनी थे। कदम्बों के साहित्य की रूपरेखा भी जैन काव्यशैली की थी। कदम्बों की राजधानी पलासिकामें जैनों की भिन्न संप्रदायों अर्थात् यापनीय, निर्ग्रन्थ कूर्चक, अहराष्टि और श्वेतपट संघों के आचार्य शांतिपूर्वक रह कर धर्मप्रचार करते थे। जैनत्व का यह प्रबल रूप उपरांत के शैव कदम्ब राजाओं को भी प्रभावित करने में सफल हुआ था। ब्राह्मण भक्त होने और अश्वमेध रचनेपर भी उन्होंने जैनों को दान दिये थे। धर्म महाराज श्री कृष्णवर्मा द्वितीय के प्रिय पुत्र युवराज देववर्मा ने त्रिपर्वत के ऊपर का कुछ क्षेत्र अर्हत् भगवान के चैत्यालय की मरम्मत, पूजा और महिमा के लिये यापनीय संघ को दान किया था। दानपत्र में देववर्मा को कदम्ब--कुल–केतु–रणप्रिय–दयामृत–सुखास्वादपूतपुण्यगुणेप्सु--देववर्म्मैकवीर लिखा है; जिससे उनके महान् व्यक्तित्व का पता चलता है। सारांशतः कदम्ब वंश के राजाओं द्वारा जैन धर्म का अभ्युदय विशेष हुआ था।

जैन संप्रदाय – कदम्ब साम्राज्य में दिगम्बर जैन धर्म ही प्रबल था, यद्यपि उस समय वह कई संघों जैसे यापनीय, कूर्चक, अहिरिष्ट आदि में विभक्त हो गय था। परन्तु दिगम्बर जैनों के साथ ही श्वेताम्बर जैनों का अस्तित्व भी कदम्ब राज्य में था। कदम्ब दान पत्रों में उनको ***श्वेतपट*** लिखा गया है, जब कि दिगम्बर जैनों का उल्लेख ***निर्ग्रन्थ*** नाम से हुआ है। मालूम ऐसा होता है कि उस समय तक दिगम्बर जैनी अपने प्राचीन नाम ***निर्ग्रन्थ*** से ही प्रसिद्ध थे। उनके साधु नंगे रहा करते थे, जिनका अनुकरण श्वेतपत्र जैनों के अतिरिक्त शेष सब ही संप्रदायों के जैनी किया करते थे। अहिरिष्ट निर्ग्रन्थ संभवतः कलिंग देश तक फैले हुए थे, क्योंकि बौद्ध ग्रंथ ***दाठा वंश*** से प्रगट है कि कलिंग का गुहशिव नामक राजा अहिरिक–निर्ग्रन्थों का भक्त था। जब गुहशिव के बौद्ध मंत्री ने उसे जैन धर्म के विमुख कर दिया था। तब यह निर्ग्रन्थ पाटलिपुत्र के राजा पांडु के आश्रम में जाकर रहे थे। हमारे विचार से यह अहिरिक–निर्ग्रन्थ और कदम्ब दानपत्र में उल्लिखित अहिरिष्ट–निर्ग्रन्थ एक ही थे। इन्हीं का उल्लेख संस्कृत ग्रंथों में संभवतः अहीक नाम से हुआ है।

यापनीय दिगम्बर जैन संघ – यापनीय – संघ की उत्पत्ति तीसरी शताब्दि में हुई कही जाती है देवसेनाचार्य ने ***'दर्शनसार'*** में लिखा है कि विक्रमाराज की मृत्यु के २०५ वर्ष पश्चात् कल्याण नगर में श्वेताम्बर साधु श्रीकलश ने यापनीय संघ की स्थापना की थी। श्री रत्ननन्दिजी ***'भद्रबाहु चरित्'*** में इस संघ की उत्पत्ति के विषय में लिखते है कि पर्हाट में राजा भूपाल राज्य करते थे, जिनकी प्रिय रानी नृकुलदेवी थीं। रानी ने एकदा राजा से उसके गुरुओं को बुलाने के लिए कहा। राजा ने बुद्धिसार मंत्री को भेजकर उन गुरुओं को बुलवाया; किन्तु जब वे आये और राजा ने देखा कि वे दिगंबर न होकर वस्त्रधारी साधु हैं तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह चुपचाप रनवास में लौट आया। रानी को जब यह बात मालूम हुई तो वह जल्दी से अपने गुरुओं के पास गई और उन्हें समझा-बुझाकर निर्ग्रन्थ दिगम्बर भेष धारण करा दिया। राजा उनका बाह्य भेष देखकर प्रसन्न हुआ। उन साधुओं की शेष क्रियायें श्वेताम्बरीय साधुओं के समान रही। इसीलिये वे लोग ***'यापनीय'*** नाम से प्रख्यात हो गये। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यापनीय संघ के साधुओं ने दिगम्बर और श्वेताम्बरों के बीच में ***'मध्यमार्ग'*** ग्रहण किया था। वे रहते तो थे दिगम्बरों की तरह नंगे और दिगम्बर प्रतिमाओं की स्थापना कराते थे, परन्तु स्त्री मुक्ति और केवलीकवलाहार जैसे श्वेताम्बरीय सिद्धान्तोको भी मानते थे। इसीलिये उनका अपना स्वाधीन अस्तित्व था। शिलालेखीय साक्ष्यों से यह ज्ञात है कि यापनीय संघ के साधुओं का कार्यक्षेत्र कार्हटाक देश के आसपास रहा है। केवल कदम्बवंश के राजाओं से ही यापनीय संघ के आचार्यों ने सम्मान पाया हो, यह बात नहीं है; बल्कि राठौर और चालुक्यवंशों के राजाओं ने भी उनके आचार्यों का आदर किया था। राठौर प्रभूतवर्ष (८१२ ई०) ने यापनीय संघ के विजयकीर्ति के शिष्य अर्ककीर्ति के शिष्य अर्ककीर्ति को दान दिया था। इस दानपत्र में यापनीय संघ को नंदिगण और पुन्नाग वृक्ष मूल संघ से सम्बन्धित लिखा है। पूर्वीय चालुक्यराज अम्म द्वितीय (९४५ ई०) ने भी यापनीय आचार्यों दिवाकर के शिष्य मंदिर देव को दान दिया था। ईस्वी १४ वीं शताब्दी तक यापनीय संघ के अस्तित्व का पता चलता है। उपरांत वह दिगम्बर संघ में ही अन्तर्भुक्त हुआ प्रतीत होता है।

जैन संघ की स्थिति – कदंब और पल्लव राज्यकाल के अंतर्गत जैन संघ में बहुत–कुछ उथल-पुथल हुई प्रतीत होती है। जैन संघ में दिगम्बर और श्वेताम्बर संघभेद हुए सौ–दो–सो वर्ष ही व्यतीत हुये थे कि यापनीय – संघ की स्थापना द्वारा उन आचार्यों का भाव पुनः एक दफा जैन संघ को मिलाकर एक बना देना था; परन्तु वह आचार्य अपने इस उद्योग में सफल नहीं हुये। उल्टे दिगम्बरों और श्वेतांबरों में अनेक संघ और गच्छ उत्पन्न हो गए। उपरान्त यापनीयों के प्रति जो कट्टरता का वर्ताव दिगंबर किया करते थे, उसमें भी शिथिलता आ गई ; यही कारण है कि उपरांत के शिलालेखों में यापनीय आचार्यों की गणना नन्दिगण और पुन्नाग–मूलसंघ में की गई है। जैन संघ के साधुओं में जिस प्रकार साधु जीवन की क्रियाओं को लेकर मतभेद और संघभेद हुये, उस प्रकार उनके भक्त श्रावक परस्पर अनैक्य में गृसित हुए नहीं मिलते। श्रावकों का मुख्य कर्तव्य दान देना और देवपूजा करना रहा है। इस समय के शिलालेखों में इन दो बातों की ही मुख्यता मिलती है। श्रावक धर्मायतनों के लिये दान देते हुए मिलते हैं तथा जिनेन्द्र पूजा को प्रकर्षता भी वे दिया करते थे। दान, जिनेन्द्र पूजन के अतिरिक्त साधुओं को आहारदान देने के लिये भी किया जाता था और एक ही दाता उदारतापूर्वक सब ही सम्प्रदायों के साधुओं को दान देता था। श्रावकों में कट्टरता प्रतीत नहीं होती। उनकी पूजा के लिये जो मूर्तियां निर्मापित की जाती थीं वे प्रायः एक–समान दिगम्बर होती थीं। बेलगाम में यापनीय संघ द्वारा प्रतिष्ठित और स्थापित हुई जिन प्रतिमाएं हैं, जिनकी पूजा आज भी दिगम्बरी निसंकोच भाव से कर रहे हैं। उस समय के श्रावकों को धर्म प्रभावना (महिमा) का भी ध्यान था। नया मन्दिर बनवाने के साथ ही वे पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार भी करते थे।

जैनधर्म और इतर संप्रदाय – जैन धर्म का प्रकर्ष तबतक इतना अधिक था कि तिरुज्ञान समन्दर और अपर सदृश विधर्मी आचार्यों को उनसे मोर्चा लेना पड़ा था। उन्होंने अपने ग्रन्थों में जैनों का खूब ही उल्लेख किया है। इस प्रकार जैनों का उस समय अपने घर में उत्पन्न मतविग्रह को शमन करने के साथ ही विधर्मी लोगों से भी मुकाबला लेना पड़ता था।

इस आवश्यकता का अनुभव करके ही मालूम होता है, उन्होंने अपना संगठन किया था । दिगम्बर दर्शन नामक ग्रन्थ से प्रगट है कि सन् ४७० ई० में श्री पूज्यपाद के शिष्य वे सब ही जैन साधु सम्मिलित हुये थे जो दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रचार करने में व्यस्त थे। ब्राह्मण लोग अपने साहित्य संघ में जैनों को स्थान नहीं देते थे। इस अपमान को उस समय के विद्वान जैन साधु सहन नहीं कर सके। उन्होंने अपना अलग ***संघ*** स्थापित किया और धर्म एवं साहित्य की उन्नति में संलग्न हो गये। अजैनों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा और जैनी अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने और साहित्य को उन्नत बनाने में सफल हुये।

तत्कालीन जैनधर्म – अजैन शास्त्रकारों ने जैन धर्म का अध्ययन करना आवश्यक समझा। और अप्पर एक समय स्वयं जैनी थे। जैन धर्म का अध्ययन करके उन्होंने अपने शस्त्रों में उसका खंडन किया है। फिर भी जो कुछ भी उन्होंने लिखा है उससे तत्कालीन जैन धर्म के स्वरूप का पता चलता है। इस समय अर्थात् ई० ७ वीं –८वीं शताब्दी तक जैनधर्म का केन्द्र मदुरा ही था। उसके आस-पास अनैमले, मसुमलै इत्यादि जो आठ पर्वत थे, उन पर जैन धर्म के अग्रणी साधु लोग रहा करते थे। उन्हीं के हाथ में जैन संघ का नेतृत्व था। वे जैन साधुगण एकान्त में रहते थे--जब समुदाय से प्रायः कम मिलते थे। वे प्राकृत भाषा बोलते और नाक के स्वर से मन्त्रों का उच्चारण करते थे। वेद और ब्राह्मणों का खंडन करने में हमेंशा तत्पर रहते हुए वे तेज धूप में ग्राम-ग्राम विचरते थे। उनके हाथों में अक्सर एक छत्री, एक चटाई और एक मोरपच्छिका रहती थी। इन साधुओं को शास्त्रार्थ करने का बड़ा चाव था और अन्य मत के आचार्यों को बाद में परास्त करने में उन्हें मजा आता था। वे केशलुच्चन करते और स्त्रियों के सम्मुख भी नग्न रहते थे। आहार के पहले वे अपने शरीरों को स्वच्छ (स्नान) नहीं करते थे। वे घोर तपस्या करते थे और आहार में सोंठ तथा मरुतवृक्ष (?) की पत्तियां अधिक लेते थे। वे शरीर में भस्म **(gallnut powder)** भी रमाते थे। वे यंत्र-मंत्र के अभ्यास में दक्ष थे और अपने मंत्रों की खूब प्रशंसा करते थे। जैन साधुओं के इस वर्णन से उनका प्रभावशाली

होना स्पष्ट है। वे ज्ञान-ध्यान और तपश्चरण में लीन रहने के साथ ही जैनधर्म प्रभावना के लिए हरसमय दत्तचित्त रहते थे। इसका अर्थ यह है कि वे महान् पण्डित थे। उनके नेतृत्व में जैनधर्म का अभ्युदय हुआ था।

गंग—राजवंश

गंग–राजवंश-- दक्षिण भारत में आन्ध्रराजवंश शक्तिहीन होनेपर ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में जो राजवंश शक्तिशाली राजवश थां। पल्लव, कदम्ब, इक्ष्वाकु आदि राजवंशों के ही इसका अभ्युदय हुआ था। और वर्तमान मैसूर राज्य में वह शासनाधिकारी था यद्यपि गंग राजवंश की उत्पत्ति के विषय में कई किम्बदन्तियाँ प्रचलित हैं परन्तु यह स्पष्ट है कि दक्षिण भारत का वह अत्यन्त प्रतिष्ठित राजकुल था। गंगवंश की अपनी अनुश्रुति इस विषय में यह है कि इक्ष्वाकुवंशी हरिश्चन्द्र के पुत्र भरत थे, जिनकी रानी विजयमहादेवी ने एक दिन गंगा स्नान किया और वरदान में गंगदत्त नामक पुत्र पाया। इन्हीं गंगदत्त की सन्तति ***गंग*** वंश के नाम से प्रसिद्ध हुई। उज्जैन के राज महीपाल ने जब गंगोपर आक्रमण किया तो पद्मनाम गंग ने अपने दो पुत्रों दिदिग और माघव को राजचिन्हों सहित दक्षिण की ओर भेज दिया। उनके चचेरे भाई पहले से ही कलिंग पर राज्य कर रहे थे। इन दोनों भाईयों ने एक जैनाचार्य की सहायता से गंगराज्य की स्थापना की। कलिंग के गंग राजाओं के शिलालेखों में भी गंगास्नान के वरदानस्वरूप जन्में हुये गांगेय की सन्तान ***गंग*** राजा कहे गये हैं। गंगनृप दुर्वनीत के गुम्मरेड्डिपुर के दानपत्र में गंगराजाओं को यदुकुल शिरोमणि कृष्णमहाराज से सम्बन्धित बतायाँ है। स्व० जायसवाल जी ने गंगकुल को मगध के कण्ववंशी राजाओं की सन्तान अनुमान किया था; क्योंकि अंतिम कण्वराजा आन्ध्र नृप को पकड़कर दक्षिण ले गये थे और गंगो का गोत्र भी कण्वयन है।

कोंगूदेश के राजा – एक अन्य विद्वान अनुमान करते है कि वे कोंगूदेश में राज्य करने वाले राजाओं के वंशज हैं। ***कोंगूदेश राजाक्कल*** में इन राजाओं के नाम निम्नप्रकार लिखे हैं :—

वीरराय चक्रवर्ती – गोविंदराय–कृष्णराय–कालवल्लभ–गोविन्दराय–कन्नर (कुमार) देव–तिरुविक्रम।

गंगवंश के पहले राजा का नाम कुग्ङुणिवर्मन् था और उपरांत कई गंगराजाओं के वैसे ही नाम थे जैसे कि कोंगूदेश के उपरोक्त राजाओं के थे। उपर्युल्लिखित कालवल्लभ, गोविन्द और कन्नर राजाओं के राजमन्त्री नामनन्दि नामक जैनी थे। ऐसे ही कारणों से कोंगूदेश के प्राचीन राजवंश से गंगराजवंश का सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। किन्तु यह स्पष्ट है कि उनका सम्पर्क इक्ष्वाकुवंश से था। सन् २२५ ई० से सन् ३४५ ई० तक इक्ष्वाकु वंश के राजाओं ने आंध्र देश में कृष्ण नदी से उत्तर दिशा में स्थित देशपर राज्य किया था। श्री कृष्णराजका अनुमान है कि इन्हीं इक्ष्वाकु राजाओं की सन्तति में गंग राज्य के संस्थापक भ्रातृयुगल थे। उधर यूनानी लेखक लिनी ने कलिंग के गंगो का उल्लेख ***गग्ङरिडै कलिग्डै* (Gangaridae Kalingae)** नाम से किया है। गंग शिलालेखों और यूनानी लेखकों के वर्णन से यह भी अनुमान होता है कि गंगो के आदि पुरुष गंगा नदी के पासवाले प्रदेश में बसते थे। वहां से उपरांत वे कलिंग और दक्षिण भारत को चले गए थे। सारांशतः गंगो का सम्बन्ध इक्ष्वाकु छत्रियों और गंगा नदी से स्पष्ट है।

दिदिग– माधव व सिंहनंदी आचर्य - ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में इक्ष्वाकु–क्षत्रियों के दो राजकुमार पेरूर नामक स्थानपर आये। यह दोनों राजकुमार भाई–भाई थे और इनके नाम दिदिग और माधव थे। पेरूरमें, जो उपरांत वहां पर गंग राज्य की स्थापना होने के कारण ***गंग-पेरूर*** नामसे प्रसिद्ध हो गया, उन दोनों भाईयों को श्री सिंहनन्दि नामक जैनाचार्य मिले। उन्होंने जैनाचार्य की बन्दना की और उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। सिंहनन्दाचार्य ने उन्हें समुचित शिक्षा प्रदान की और पद्मावती देवी से उनके लिये एक वरदान प्राप्त किया। उन्होंने उन राजकुमारों को एक तलवार भी भेट की और उनका राज्य स्थापित करा देने का वचन दिया। गुरु महाराज के इस आश्वासन से उन दोनों भाइयों को अतीव प्रसन्नता हुई और माधव ने जयकार के साथ वह तलवार हाथ में ली और

अपना पौरुष प्रगट करने के लिये उसके एक बारसे एक शिलाके दो टुकड़े कर डाले। सिंहनन्दिस्वामी ने यह एक शुभ शकुन समझा और ***कर्निकरकलिकाओं*** का एक मुकुट बनाकर उनके शीशपर रख दिया। तथा अपनी मोरपिच्छिका ध्वजरूप में उन्हें भेट की। साथ ही आचार्य महाराज ने उन भाईयों को प्रतिज्ञा कराके आदेश दिया कि ***यदि तुम अपनी प्रतिज्ञा भंग करोगे,*** यदि तुम जैन शासन के प्रतिकूल जाओंगे, यदि तुम पर-स्त्री-लम्पटी होगे, यदि तुम मद्य-मांस भक्षण करोंगे, यदि तुम दान नहीं करोंगे, और यदि तुम रणक्षेत्र से पीठ दिखाकर भागोगे तो निश्चय तुम्हारा कुल नाश को प्राप्त होगा। इस आदेश को दोनों भाइयों ने शिरोधार्य किया। उस समय मैसूर (जो तब गग्ङवाडी के नाम से प्रसिद्ध था) जैनियों की अधिक संख्या थी और उनके गुरु भी श्री सिंहनन्दि आचार्य थे। गुरु आज्ञा मानकर जनता ने दिदिग और माधव को अपना राजा स्वीकार किया। इस प्रकार श्री सिंहनंदि आचार्य की सहायता से गंग राज्य का जन्म हुआ और इस राज्य में अधिकृत प्रदेश ***गग्ङवाड़ी ९६००० *** के नाम से प्रख्यात् हुआ।

क्रमशः

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

संक्रमण करण — बन्ध कर्म के परिवर्तन क्रिया को संक्रमण करण कहते है। संक्रमण करण से कर्म के स्वभाव में परिवर्तन आता है। कभी एक अंश बदलता है तो कभी सम्पूर्ण कर्म का स्वभाव ही बदलता जाता है।

जैसे — एक जीवात्मा जब कल्याण करके यश प्राप्ति का कर्म बन्ध करता है, पर संक्रमण काल में यश अपयश में बदल जाता है। कार्य सेवा करना कर्म के अनुसार अनिवार्य हो जाता है। अब उससे जन सेवा करके बदनामी को स्वीकार करना ही है। इसके विपरीत किसी ने मन समूह को दुःख देकर अपयश कर्म का उपार्जन किया है, पर उसके द्वारा संक्रमण करण द्वारा एकांश अपयश को यश में बदल दिया। अब वह ऐसा आदमी बन गया कि जनता का अहित ही कर रहा है, फिर भी समाज में सम्मान और यश का भागी बना हुआ है। कोई शुभ कार्य शांतिकाल में उस कार्य के पश्चाताप् द्वारा अशुभ कर्म प्रवृत्ति में बदल जाता है।

एक शास्त्रीय घटना — कंजूस मम्मन सेठ ने पूर्व भव में मुनि को लड्डूदान देकर अपूर्व पूण्य का उपार्जन किया। बाद में स्वाद लोलुपता के कारण मुनि से पुनः वापस मांगने गया। मुनि का धर्म वापस देने का नहीं होने के कारण लड्डू को मिट्टी में डालकर नष्ट कर दिया। न मुनि को खाने दिया और न स्वयं खा सका। न खा पाने का पश्चाताप करता रहा। मर कर मम्मन सेठ बना। मुनि को दान देने के कारण अपार धन का मालिक बना, पर खाने में बाधा देने के कारण स्वयं धन का भोग नहीं कर पाया। उन्होंने दान देकर तो अपार पुण्य उपार्जन किया, पर संक्रमण करण द्वारा अध्यावसाय से जीवन में धन काम न आवे ऐसा अन्तराय कर्म का बन्ध कर लिया।

आप इस संक्रमण विधान को समझकर वैसा विचार न कर बैठे कि चलो .... अभी तो मौज–मजा कर ले, अन्तिम समय में पश्चाताप्

करके सब कर्मो को बदल देगें। पर आपकी यह धारणा ही गलत है, आपका अन्तिम समय कैसा हो यह हमेशा अनिर्णित है। आप किस भावना में और कब मरेगें। यह निश्चित नहीं है। आप लाख मरने की इच्छा करेंगे तब आपकी मौत नहीं आयेगी, और जब आप जीने की इच्छा रखेगें तब मौत उपस्थित हो जायेगी। इसलिये एक कहावत है — बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न मौत,। और दूसरी बात हमें याद रखनी चाहिए हम जीवन में जो कार्य अधिक करते है, वही अन्तिम समय में नजर के सामने आ जाता है।

इसीलिए हमारी मनोदशा हमेशा शुभ बनाये रखने के लिये प्रयत्न करना चाहिए। सत् के साथ लगाव का अभ्यास करना चाहिये।

उदीरणा करण — शांतिकाल पूर्ण होने से पूर्व प्रयत्न पूर्वक जो कर्म उदय में लाया जाता है उससे उदीरणा करण कहते है। पुरुषार्थ और प्रयत्न द्वारा समय से पूर्व कर्म उदय में लाकर भोग कर नष्ट करने की क्रिया को उदीरणा कहते है। प्रत्येक कार्य के पीछे पांच कारण कार्य करते हैं। कर्म, नियति, पुरुषार्थ, काल और स्वभाव। इस पांच में से कोई मुख्य रहता है तो कोई गौण होता है। अर्थात् कोई दिखता है तो कोई अदृश्य रहता है।

पुण्यकर्म और पापकर्म दोनों की उदारणा होती है। जीवात्मा कभी-कभी अज्ञात अवस्था में भी उदीरणा कर लेता है। इसलिये शास्त्र में तप, त्याग की अत्यधिक महिमा है। प्रत्येक जीवात्मा की आत्मसत्ता में सभी प्रकार के कर्म रहते हैं। सुख के दिनों में जब शरीर सशक्त हो, इन्द्रियां बलिष्ट हो तब त्याग रूपी प्रक्रिया से उदीरणा करके कर्म को नाश कर देना चाहिए।

जैसे एक धनी पर्याप्त भोजन सामग्री होते हुए भी उपवास करके सहन करता है उससे दुःख नहीं आनन्द होता है। वही भोजन मिलने पर या अनिच्छा से करे तो दुःख होगा। अर्थात् अनुकूल समय में दुःख को सहन कर लेना सहजभाव से समता पूर्वक सहन कर लेना उदीरणा करण है।

भूतकाल में अनन्त जन्म में अनन्त कर्म किया होगा। जो वर्तमान में शांति काल में पड़ा है। पर जब शांतिकाल पूर्ण होकर उदयकाल आवेगा, तब उसके अनुरूप हमें फल अवश्य भोगना पड़ेगा। शरीर अस्वस्थ हो और अशाता वेदनीय कर्म उदय में आया हो अधिक आर्त्तध्यान, रोद्रध्यान करके नया कर्म का बन्ध होता है। इसलिए शरीर स्वस्थ हो उसी समय स्वेच्छा से दुःख भोगकर दुःख को नष्ट कर देना चाहिए।

इसी प्रकार सत्कर्म से पुण्य कर्म को उदीरणा करके लाया जा सकता है। सुख के दिनों में दुःख सहन करना सहज है पर दुःख के दिनों में सुख सहन करना कठिन है। एक दुःखी व्यक्ति को सुख मिलने से वह सुख को दुःख में ही बदल लेगा। जैसे---एक व्यक्ति को १०० रूपये मिला। पैसे लेकर वह और अन्याय करेगा। पीकर और स्वयं को दुःख में डालेगा।

उद्‌वर्तना करण -- शांति काल में रहा हुआ कर्मो का समय और परिणाम में तीव्रता लाने की क्रिया को उद्‌वर्तनाकरण कहते है।

अपवर्तना करण — शांति काल में रहा हुआ कर्मो का समय और परिणाम में मन्दता लेने की क्रिया को अपवर्तना कहते है।

जैसे– किसी को कारावास १० वर्ष का था। प्रयत्न करके केस को नरम किया गया। समय में कमी की गयी। इसके विपरीत एक व्यक्ति बीमार है दवा लिया। रोग और बढ़ गया। कष्ट अधिक और समय भी अधिक लगा।

पूण्य कर्म को अनुमोदन करके गुणाकार और पापकर्म को पश्चाताप् करके भागाकार करना चाहिए।

मलयासुन्दरी चरित्र

पुनः पति-वियोग में मलया को सर्प-दंश

राजा की आज्ञा होते ही राज-सेवकों ने तमाम सामग्री ला रक्खी। महाबल ने मलयासुन्दरी को भोजन कराया। सिद्धराज–राजन् ! अब आप मुझे आज्ञा दें। अपने वचन को पालन करें। मैं अपनी स्त्री को साथ लेकर अपने देश को जाऊं। राजा ने इस बात का कुछ भी उत्तर न दिया। उसके मौन का आशय समझ कर नगर के प्रधान नागरिकों ने भी उसे खूब समझाया। महाराज ! अब यह इसकी स्त्री इसे दे देनी चाहिये। अपने वचन का पालन करके इन बेचारे दुःखियों को सुखी करना चाहिये।

विषयान्ध राजा को नगर निवासियों की बातें बिलकुल न सुहाई। वह हित-शिक्षा की बातें सुन उल्टा मन ही मन उन पर क्रोध करता हुआ कुछ देर सोच कर बोला–सिद्धराज ! तुमने हमारा एक काम और भी करना मंजूर किया हुआ है। वह कार्य सिर्फ यही है कि हमारे मस्तिष्क में हमेशा दर्द हुआ करता है, शान्ति नहीं मिलती। वैद्यों का कथन है कि यदि कभी कोई उत्तम–लक्षणों वाला पुरुष मिल जाय, तो उसे चिता में जीवित जला कर और उस चिता की राख मस्तक पर लगाई जाय तो यह दर्द मिट सकता है।

राजा कंदर्प के इन शब्दों को सुन कर महाबल विचार में पड़ गया। सचमुच यह राजा मलयासुन्दरी पर आसक्त हो मुझे मारना चाहता है। इसी लिये इसने दुष्ट आशय से मुझसे पहले एक कार्य कराने का वचन ले लिया है। इसने मुझे खूब फँसाया ! अगर मंजूर किया हुआ इसका यह कार्य मैं न करूँ, तो यह मलयासुन्दरी को कदापि मुझे न सौंपेगा, और इधर यह कार्य भी मृत्यु के मुख में गये बिना नहीं हो सकता। कुछ सोच कर धैर्य धारण कर वह बोला–राजन् ! इस औषधि के सम्बन्ध में आपको कुछ भी चिंता न करनी चाहिये। यद्यपि यह औषधि प्राप्त करना बड़ा

कठिन काम है तथापि मैं आपको यह दवा ला दूंगा। आप यह कार्य होने पर मेरी स्त्री को मुझे सौंप देना।

दुष्ट परिणाम वाला राजा कुछ हँस कर बोला–परोपकारी सिद्धराज! यह आप क्या कहते हैं? क्या मेरे वचन पर विश्वास नहीं है? यह कार्य करने पर मैं तुरन्त ही आपकी स्त्री को आपके सुपूर्द कर दूंगा। महाबल बोला–राजन् ! उत्तम लक्षणवाला पुरुष जल मरने के लिये और कहाँ मिल सकता है? मैं खुद ही चिता में प्रवेश कर अपने मृतक की राख आपको ला दूंगा। आप श्मशान भूमि में बहुतसी लकड़ियाँ भिजवा दें और चिता तैयार करा दें। महाबल की ये बातें सुन राजा कंदर्प को बड़ी खुशी हुई। और उसने अनेक गाड़ियाँ भरकर श्मशान भूमि में भिजवा दीं। यह बात नगर में फैलने से नागरिक लोगों में कोलाहल मच गया। वे आपस में बोलने लगे राजा का कितना अन्याय है? बेचारे परदेशी पुरुष को जीवित जलाने का आग्रह कर रहा है, क्या कभी मनुष्य की राख लगाने से भी सिर के दर्द मिटे हैं?

जलती चिता में महाबल —

महाबल कुमार अन्तिम अवस्था का वेष धारण कर संध्या समय श्मशान भूमि में आया। अनेक राजसुभट उसके चारों तरफ खड़े थे। दया दुःख और आश्चर्य से हजारों मनुष्य एकत्रित हो इस दुर्घटना को देख रहे थे। मलयासुन्दरी को भी यह बात मालूम हुई, अतः उसे बड़ा दुःख हुआ। वह अपने आपको धिक्कारने लगी, और उसने यह प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक मैं अपने प्राण-प्रिय पतिदेव के दर्शन न करलूं तब तक अन्न जल ग्रहण न करूँगी। महाबल का सौन्दर्य तेज और साहस देख उस पर प्रसन्न हुये प्रजा के अनेक प्रधान पुरुषों ने दुःखित हो राजा के पास जाकर प्रार्थना की– ***राजन् ! यह महान् अन्याय हो रहा है*** राख के बहाने से ऐसे निरपराधी परोपकारी उत्तम पुरुष को पशु के समान मार डालना यह बात किसी तरह भी योग्य नहीं है। ऐसा अन्याय करने की अपेक्षा उसे जीवित ही अपने देश को जाने देने की आज्ञा देना विशेष योग्य है। राजा बोला-

-प्रजाजनों ! इस पुरुष के जीवित रहते हुए यह स्त्री तो मेरे सन्मुख भी नहीं देखती। और इस स्त्री के बिना मेरे चित्त को शांति नहीं होती। मैं इस तरह दोनों तरफ से संकट में पड़ा हूँ। इसलिये मेरे पास तुम्हारे लिये कोई उत्तर नहीं।

राजा का जीवा नामक प्रधान बोला—भाइयों! इस बात में तुम्हें पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर सिद्धराज मरता है तो मरने दो। क्या उसके लिये हम राजा को संकट में पड़ा देख सकते हैं? मंत्री के शब्द सुन निराश होकर वे वापिस लौट आये। परन्तु राजा और मंत्री के प्रति उनके हृदय में घृणा और तिरस्कार पैदा हो गया।

श्मशान भूमि में एक स्थान पसन्द कर महाबल ने राजपुरुषों को वहाँ पर चिता बनाने की आज्ञा दी। उन्होंने शीघ्र ही बहुत सी लकड़ियों को लगाकर खूब ऊंची चिता रचवा दी। महाबल चिता के बीच में बैठ गए और उसने अपने चारों ओर खूब लकड़ियाँ लगाने के लिये सूचना कर दी। उस समय चिता के चारों तरफ राजपुरुष इस आशय से कि वह चिता से निकल कर कहीं भाग न जाय सख्त पहरा दे रहे थे।

चिता ठीक हो जाने पर उसमें अग्नि चेताई गई। यह देख लोगों के हृदय में भी दुःखाग्नि सुलग उठी। चिता खूब जल उठने पर भी उसके अन्दर से महाबल का किसी ने चीत्कार तक भी न सुना। इससे लोग उसके अनन्य धैर्य की प्रशंसा करने लगे। जब चिता संपूर्ण जल चुकी तब राजपुरुषों ने वापिस आकर राजा को महाबल के चिता में भस्म होने का सारा वृतान्त कह सुनाया। उस रात को राजा कदर्प और मन्त्री जीवा के सिवा प्रायःनगर के तमाम लोगों को सुख से निद्रा न आई।

प्रातःकाल होने पर जब शहर में वहाँ के लोग महाबल के धैर्य और राजा के अन्याय की परस्पर बातें कर रहे थे, उतने में लोगों ने अकस्मात् सिर पर छोटी सी गठरी रक्खे हुए श्मशान भूमि की तरफ से आते हुये सिद्धराज को देखा। उसे जीवित आते देख जनता के हृदय में आश्चर्य और आनन्द का पार न रहा। आश्चर्य चकित हो वे बोल उठे धैर्यवान

सत्पुरुष! आप किस तरह वापिस आये? और यह सिर पर गठड़ी में क्या लाये हो? सिद्धराज बोला–राजा के लिये उस चिता की राख लेकर आया हूँ। इतना ही कह कर महाबल राजमहल की तरफ चला गया।

राजसभा में राजा के समक्ष राख की गठरी रखकर सिद्ध पुरुष बोला–राजन् ! आपकी दुर्लभ औषधी यह उस चिता की राख है। अब आप इच्छा के अनुसार जितनी चाहिये उतनी अपने मस्तक में डालें जिससे आपके मस्तक की व्याधि शान्त हो।

साश्चर्य राजा बोला – सिद्धराज ! तू चिताग्नि में दग्ध न हुआ? सिद्धराज ने समयानुसार विचार कर उत्तर दिया – महाराज ! मैं चिता में जल कर भस्मीभूत हो गया था परन्तु मेरे सत्य के प्रभाव से वहां पर देव आ पहुँचे और उन्होंने चिता को अमृत से सिंचन किया। इससे मैं फिर से जीवित हो आया हूँ। इसलिये महाराज ! आप इस रक्षा को ग्रहण करें, और अपने बोले हुए वचनों को पालन कर मेरी स्त्री मेरे सुपुर्द कर दें।

यह सुन राजा विचारने लगा – सचमुच यह कोई महाधूर्त है। सुभटों की नजर बचाकर मालूम होता है यह चिता से बाहर निकल गया है। सिद्धराज के गुणानुरागी या कंदर्प की अनीति से राजद्रोही बने हुये मनुष्यों ने मलयासुन्दरी को राख लेकर सिद्ध पुरुष के जीवित आने की खबर दी। यह खबर पाते ही मलयासुन्दरी इस तरह विकसित हो गई जिस तरह रात भर की मुरझाई हुई कमलिनी प्रातः काल सूर्य के समागम से विकसित हो जाती है।

सिद्धराज राजसभा में राख की गठरी रख मिलने के लिये अत्कंठित हुई मलयासुन्दरी के पास पहुँचा। उसे देख मलयासुन्दरी हर्ष के साथ गद्गद हो उठी ! वह बोली — प्राणनाथ ! चिता में प्रवेश करके भी आप किस तरह वापिस आ गये।

महाबल ने कहा प्रिये ! मैं उस अन्धकूप में से जिस सुरंग के मुख द्वार से निकला था वहाँ पर मैंने चारों तरफ बड़ी चिता बनवाई थी और बीच में अपने बैठने के लिये जगह खाली रखवाई थी। चिता में प्रवेश करने

के बाद जब चिता सुलगाई गई थी, तब मैं सुरंग द्वार की शिला को दूर करके उसमें अन्दर चला गया और अन्दर से फिर मैंने द्वार बन्द कर लिया। जब चिता जल कर ठंड़ी हो गई तब पिछली रात को मैं धीरे-धीरे द्वार के पास आया, और उसे खोलकर बाहर निकला, उस समय वहां पर कोई भी मनुष्य न था। इसलिये राख की गठरी बांध कर प्रातः काल होते ही मैं यहां आ गया।

इस प्रकार परस्पर जब वे बातें कर रहे थे तब राजा उनके पास आकर बोला — अरे भाई ! सिद्धराज ! इस बेचारी को कुछ भोजन तो कराओं इसने कल से बिलकुल अन्न जल नहीं लिया है। सिद्धराज ने उसे भोजन कराया फिर राजा से कहा – महाराज! मैंने आपका कार्य कर दिया है, अब आप अपना वचन पालन कीजिये, और अपनी स्त्री के साथ मुझे देश जाने की आज्ञा दीजियें।

यह सुनकर राजा घबराया, उसे कुछ भी उत्तर देते न बना। वह मलयासुन्दरी को कदापि महाबल को देना न चाहता था। परन्तु इस समय एकाएक वह साफ इन्कार भी नहीं कर सकता था। इसलिये उसने अपने पास रहे हुये प्रधान मन्त्री जीवा को सम्मुख देख सहज में इशारा किया।

मंत्री ने कुछ देर विचार कर राजा की इच्छानुसार महाबल से कहा सिद्धराज! आपने राजा का यह काम कर हमपर बड़ा उपकार किया है। आपके धैर्य और परोपकार की भावना को हम धन्यवाद देते हैं। परन्तु सिर्फ एक कार्य आप राजा का और करदें फिर इच्छानुसार आप अपने देश को चले जाइये।

इस शहर के पास जो छिन्न-टंक नामक पहाड़ है उसके एक विषम शिखर के पिछले हिस्से में निरंतर फल देनेवाला एक आम्रवृक्ष है। पूर्व दिशा की ओर से उस शिखर की चोटी पर चढ़ा जा सकता है। क्योंकि अन्य किसी तरफ से इतना ऊंचे चढ़ने का कोई मार्ग नहीं है। उस शिखर की चोटी से नीचे की तरफ उस विषम खीण से वह आम्रबृक्ष दीखता है। उसे लक्ष्य कर वहां से कूदना और आम्र के पके फल लेकर फिर उस

विषम मार्ग से वापिस आकर वे फल राजा को देना। सत्पुरुष ! यह काम यद्यपि बड़ा कठिन है, तथापि तुम्हारे जैसे साहसी पुरुषों के लिये यह करने योग्य है। हमारे राजा को सदैव पित्त की पीड़ा रहती है, और वैद्यों का कथन है, कि आम्र फल के खाने से वह पित्त पीड़ा शान्त होगी।

प्रधान के ये शब्द सुनकर कुमार विचारने लगा कि यह आदेश मेरे लिये अति दुष्कर है। इसमें तो मेरी बुद्धि भी कुछ काम नहीं करती। इस कार्य में मेरी मृत्यु की भी संभावना है। तथापि किसी विधियोग से यदि यह कठिन कार्य मुझ से हो गया तो मुझे जीवन और स्त्री दोनों की प्राप्ति होगी। इसलिये इस कार्य को भी करने का मुझे प्रयत्न तो करना ही चाहिये। मेरे कार्यों से और राजा की अनीति से यहां की जनता का मुझ पर पूर्ण प्रेम है। यह भी मेरे विजय का चिन्ह है। इत्यादि विचार कर साहस धारण कर महाबल बोला–मंत्रीवर ! मैं आपका यह कठिन कार्य भी अगर कर दूं तो आप बारंबार अपने वचनों से अब न फिरना। यदि आप फिर भी वैसा करेंगे तो आप लोगों के हक में अच्छा परिणाम नहीं होगा। इतना कह कर महाबल अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ।

संसार में साहस के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। साहस में प्रबल प्रयत्न, उत्साह और अतुल पराक्रम की आवश्यकता है। साहसियों का अनेक मनुष्य आश्रयलेते है। इसलिये साहस में अगाध शक्ति है।

इस बात का समाचार मलयासुन्दरी को भी मिल चुका था। इसलिये उसके हृदय में अति दुःख होना स्वाभाविक ही था। उसकी आंखों से अश्रु टपकते हुए देख कर भी महाबल धैर्य धारण कर छिन्न टंक नामक पहाड़ के सम्मुख चल पड़ा। साहसी लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने में बिलम्ब नहीं किया करते। इस समय भी उसके प्रेम और सहानुभूति से महाबल के पीछे हजारों मनुष्य पहाड़ की तरफ जा रहे थे। क्योंकि स्वामी-प्रेम की अपेक्षा संसार में सदैव गुणों पर अधिक प्रेम होता है। महाबल मार्ग-दर्शक राजपुरुषों के साथ उस विषम पर्वत पर चढ़ गया। इस समय भी जनता के हृदय में शोक-सन्ताप, और राजा तथा जीवा मंत्री के हृदय में आनन्द

छा रहा था। शिखर की तीक्ष्ण चोटी पर चढ़ कर राजपुरुषों ने बहुत दूरी पर नीचे विषम खीण में रहा हुआ इशारे से एक आम्रतरु बतलाया। महाबल ने उसको लक्ष्य कर पंच परमेष्ठि मंत्र का स्मरण कर और ***इस जिन्दगी में मैंने यदि कुछ न्याय पूर्वक शुभ कर्म उपार्जन किया हो तो उसके प्रभाव से मेरा यह साहस सफल हो*** यों कहकर जनता के हाहाकार करते हुए भी पर्वत शिखर से झंपापात कर दिया। वह देखते ही देखते मनुष्यों की नजर से अदृश्य हो गया। अहा! कैसा अन्याय ! राजा का कैसा घोर पाप !! कैसी लम्पटता !!! निर्दोष मनुष्य को कैसी कुमति से मार डाला ! विचारे उस सिद्धपुरुष की हड्डियों का चूरा-चूरा हो गया होगा। मालूम होता है कि अब इस राजा का और राज्य का अन्त आ गया है। क्या किया जाय? ***विनाश काले विपरीत बुद्धि :*** भाइयों ! अपने को भी सावधान रहना चाहिये, नहीं तो इस पापी राजा के पाप से कभी हम भी आफत में पड़ेगें। इत्यादि अमंगल-चिन्ता, और राजा की निन्दा करते हुये सब लोग अपने-अपने घर पर आ गये। राजपुरुषों ने भी राजा के पास आकर सब हकीकत बताई। राजा और मंत्री ने निश्चय कर लिया कि बस अब की बार तो अवश्य ही खतम हो गया होगा।

प्रातःकाल होते ही पके हुए आम्रफलों का करंडिया सिर पर रखे हुए, प्रसन्नता धारण किये हुए, महाबल कुमार को जब नागरिक लोगों ने आते देखा तब उनके हर्ष और विस्मय का पार न रहा। वे एकदम आश्चर्य में पड़ कर विचारने लगे। अहो! कैसी विचित्रता ! यह कोई दिव्य पुरुष है या कोई विद्याधर ? ऐसे-ऐसे मरणान्त संकटों में भी जाकर यह राजा का कार्य सिद्ध कर लाता है। सचमुच ही इसका सिद्धराज नाम सार्थक ही है। मालूम होता है इसके कोई देवता वश में है। इसी कारण यह उसकी सहायता से असाध्य कार्यों को भी सिद्ध कर लाता है। इत्यादि विचार करते हुये वे हर्षित हो दौड़ते हुए उसके पास आये, और बोले—सत्पुरुष सिद्धराज ! आप किस तरह वापिस आये? आपके शरीर को कुछ चोट तो नहीं पहुँची ?

सिद्धराज बोला — महानुभावों ! आप मुझ से इस समय कोई सवाल न कीजिए। कुछ देर बाद आपको सब कुछ मालूम हो जायेगा। इस तरह उत्तर देते हुए वह अनेक मनुष्यों के साथ राज-सभा में आया। बहुत से मनुष्यों के साथ महाबल को राज-सभा में आया देख कर राजा का चेहरा स्याह पड़ गया। वह उसके सामर्थ्य को देख कर कुछ भयभीत भी हो गया, इसलिए उसने महाबल का कुछ भी आदर सत्कार न किया। परन्तु राजा को मौन देख जीवा मंत्री बोला — सिद्ध पुरुष! ऐसा दुष्कर कार्य कर के आप बहुत ही जल्दी आ गये! कहिए, आपके शरीर में तो कुशलता है न ?

जी, हां मेरा शरीर कुशल है। यों कहते हुए महाबल ने अपने सिर से आम्र के फलों का करंडिया उतारा। और जहां राजा व मंत्री बैठे थे वहां ही उनके पास वह करंडिया रख दिया। महाबल बोला — राजन् ! इन पके हुए आम्रफलों को खाकर आप अपने पित्त रोगों को शान्त कीजिये। उसके गंभीर शब्द सुन कर और ऐसा विषम कार्य करने का सामर्थ्य देख कर सभासदों के दिल में भी कुछ भय पैदा हुआ। इस समय तमाम राजसभा मौनावलंबी हो महाबल के अतुल सामर्थ्य का विचार कर रही थी।

महाबल ने करंडिये का मुंह खोलकर उसमें से दो चार सुन्दर फल हाथ में लिये, और राजा से कहा—***आप इसमें से फल खाइये; मैं अपनी स्त्री के पास मिल आता हूँ, यों कहकर वह दुःखित हुई मलयासुन्दरी के पास आया महाबल को पास आया देख मलयासुन्दरी पूर्व के समान ही हर्षित हो उससे भेट पड़ी। वह प्रसन्न मुख से बोली, प्राण प्यारे ! ऐसे कठिन कार्य में आपको किस तरह सफलता मिली?***

महाबल — ***प्यारी ! तुम्हे याद होगा पहले जो योगी मेरी सहायता से सुवर्ण पुरुष सिद्ध करते हुए अग्नि कुण्ड में गिर कर मर गया था, वह मर कर व्यंतर देव हो गया। हमारे सद्भाग्य से वह उसी आम्र वृक्ष पर ही रहता है। पर्वत शिखर की चोटी से झंपापात करते हुए उसने मुझे देखा और मेरे अंतिम शब्द सुनें। उस व्यंतर देव ने अपने ज्ञान से मुझे पहचान लिया। जिस वक्त झंपापात करके मैं नीचे आम्र वृक्ष के पास***

पहुँचा उस वक्त उसने मुझे नीचे न पड़ने देकर अधर ही धारण कर लिया। उसने प्रत्यक्ष होकर मुझसे कहा—परोपकारी राजकुमार ! आप जरा भी भय मत करना। पृथ्वी स्थानपुर के श्मशान में उत्तर साधक बन कर तुमने मुझपर उपकार किया है; परन्तु मेरी किसी भूल के कारण सुवर्ण पुरुष सिद्ध न हुआ। मैं वहां से मरकर व्यंतर देव की योनि में पैदा हुआ हूं। इस समय मुझे तुम्हारे उपकार का बदला देने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है। इत्यादि उसने मुझे अपना सर्ववृत्तान्त सुनाया।

मैं निर्भय होकर उसके पास ही रहा। सचमुच ही किसी पर किया हुआ उपकार निरर्थक नहीं जाता। प्रातः काल होने पर व्यंतर देवने कहा *राजकुमार ! आप मेरे अतिथि हैं। घर आये हुए अतिथि का सत्कार करना ही चाहिए। इसलिए आप फरमाइये, मैं आपका कौन सा इष्ट कार्य करके आपका स्वागत करूं? मैंने कहा, कंदर्प राजा मुझे जो कार्य बतलावे मैं उस कार्य को करने में शक्तिमान बनूं आप मुझे इस तरह की सहायता करें।*

व्यंतर — कंदर्प राजा तो आपको मारना चाहता है। इसलिये आपकी सम्मति हो तो मैं उसे पूरी शिक्षा दे दूँ।

मैंने कहा — आपकी सहायता से मैं उसका कार्य पूर्ण करूं तथापि यदि वह अपने दुष्ट अभिप्राय से बाज न आवे तो फिर आपको उचित मालूम हो सो करें। व्यंतर देव ने मेरी बात मंजूर करली, और कहा, यह तो मैं करूंगा ही परन्तु और भी आपको कभी कोई असाध्य कार्य करना पड़े तो आप अवश्य ही मुझे याद करना। याद करते ही मैं आपकी सेवा में आकर आपकी इच्छानुसार सहायता करूंगा। यो कहकर वह किसी जगह से एक करंडिया ले आया और उसमें पके हुए सुन्दर फल भर कर करंडिये सहित वह मुझे इस शहर के उद्यान में ले आया।

व्यंतर बोला — *कुमार ! इस करंडिये को लेकर तुम राजा के पास चलो, मैं भी अदृश्य होकर तुम्हारे साथ ही चलता हूँ और वहां पर जैसा उचित होगा वैसा किया जायेगा, यों कहकर वह अदृश्य हो गया।*

मैं फलों का करंडिया राजसभा में रख कर इस समय तुम्हारे पास आया हूँ। प्रिय ? अब घबराने की आवश्यकता नहीं है। मुझे विश्वास है इस देव की सहायता से अब हमारे संकट शीघ्र ही दूर होंगे।

पापियों का नाश और राज्य –प्राप्ति –

महाबल जिस समय अपनी प्रिया के साथ अपने दुःख सुख की बातें कर रहा था; उस समय राजसभा में रक्खे हुए उस आम्रफलों के करंडिये से यह भयानक शब्द निकलने लगा ***राजा को खाऊं या मंत्री को, करंडिये से बारंबार निकलते हुए इन भयानक शब्दों को सुनकर राजा भयभ्रान्त हो गया, और वह लोगों की तरफ देखकर बोला–सचमुच ही यह सिद्धराज कोई चमत्कारिक पुरुष मालूम होता है; अन्यथा ऐसे दुष्कर कार्य भी लीलामात्र में किस तरह कर पाता? संभव है हमारा सर्वनाश करने के लिये वह इस करंडिये में आम्रफलों के बहाने कोई विभीषिका ले आया है।***

इस प्रकार राजा को भयभीत हुआ देख जीवा मंत्री हंसते हुए बोल उठा–महाराज ! इस तरह डरने से काम न चलेगा। ऐसे तो बहुत से धूर्त फिरते हैं। क्या हम इससे डर जायेंगे? यदि ऐसी छोटी-छोटी बातों से भयभीत होने लगें तब फिर राज-कार्य किस तरह चल सकता है? इस तरह बोलते हुए प्रधान ने उठकर करंडिये की तरफ हाथ बढ़ाया। राजा ने उसे बहुत मना किया कि, मंत्री ! ठहरो इस कार्य में हमें बल दिखाने की जरूरत नहीं है। तुम उस करंडिये के पास मत जाओ। परन्तु **विनाशकाले विपरीत बुद्धि** : इस उक्ति के अनुसार राजा के मना करने पर भी मंत्री करंडिये के पास आकर जब उसका ढक्कन उठाने लगा तब फिर से मृत्यु की दुन्दुभी के समान वही शब्द सुनाई दिया ***राजा को खाऊ या मंत्री को।***

इस भयानक शब्द का भी अनादर कर करंडिया उघाड़कर आभ्रफल लेने की इच्छा से मंत्री ने जब उसके अन्दर हाथ डाला उस समय यमराज की जीभ के समान उस करंडिये से भयंकर अग्निज्वाला प्रगटी। इस भयंकर अग्निज्वाला में जीवा मंत्री पतंग के समान भस्मिभूत हो गया। वह

अग्निज्वाला इतने से ही शांत न होकर उसने विकराल रूप धारण कर लिया। देखते ही देखते उसने उपर बढ़कर सभामंडल को भी भस्मीभूत कर दिया। सभा में भागदौड़ मच गई। राजा भयभीत हो कांपने लगा। मृत्यु के भय से उसने शीघ्र ही सिद्धराज को बुलवाया। वहां इस समाचार से शहर भर में हलचल सी मच गई।

जीवा मंत्री के मरने की, करंडिये में से निकलते हुए भयानक शब्द की, और अग्निकांड की दुर्घटना सुनकर राजाने नम्रता पूर्वक महाबल से कहा -हे सत्पुरुष ! हम पर कृपाकर यह उपद्रव जल्दी शान्त करो। राजा की नम्र प्रार्थना से एवं उस अग्नि से किसी निर्दोष प्राणी के जान माल को नुकसान न पहुँचे यह विचार कर सिद्धराज ने पानी मंगाकर मंत्र पढ़ कर उस करंडिये पर छिड़का। इससे महाबल की इच्छा के अधीन हुए, उस देव ने आग को शान्त कर दी। महाबल ने उस करंडिये पर फिर से ढक्कन ढक दिय। फिर राजसभा में पहले जैसी ही शान्ति हो गई।

परन्तु किसी भी मनुष्य की उस करंडिये के पास जाने की हिम्मत न चली। सबके दिल में यही विचार होता था कि इस भयंकर करंडिये को यहां से उठवा दिया जाय। लोगों के यह विचार करते हुये महाबल ने फिर से उस करंडिये को उघाड़ा और उसमें से दो चार सुन्दर फल निकाल कर राजा को देने लगा। परन्तु भयभीत हुए राजा ने उन फलों को लेने से इन्कार कर दिया। महाबल ने वही फल दूसरे मनुष्य के हाथ में देकर राजा को यह निश्चय करा दिया कि अब उन फलों में किसी तरह का भय नहीं है। फिर अन्य पुरुष के द्वारा राजा ने उन फलों को ग्रहण किया। मंत्री की मृत्यु से राजा को इतना दुःख हुआ मानों उसकी दाहिनी भुजा टूट गई हो। परन्तु उसकी मृत्यु में राजा और मंत्री का ही अन्याय होने के कारण उसके शोक में अन्य मनुष्यों की तरफ से सहानुभूति तक भी न मिली। राजा ने उसी वक्त जीवा मंत्री के पुत्र को मंत्री का स्थान दे दिया।

क्रमशः

संकलन

अजीत कुमार सराक

खुदाई के दौरान प्रभु महावीर की प्रतिमा कलाकृतियां एवं अवशेष मिले।

वलियापुर। पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के पुरुलिया मुफस्सिल थाना क्षेत्र के कुसंटांड गांव के नजदीक चारों ओर हरी-भरी फसलों के बीच एक सुनसान, खेत के बीच करंज पेड़ के नीचे पिछले १९ अगस्त को ग्रामीण द्वारा खुदाई के दौरान मिले प्राचीन कलाकृतियां तथा अवशेष पूरे जिले में ही नहीं इसके आस-पास के इलाकों में भी चर्चा का विषय बन चुकी है।

खुदाई के दौरान पायी गयी प्राचीनकालीन कलाकृतियां तथा मूर्तियां काफी आकर्षण ढंग से बनी हुई हैं ऐसा देखने से लगता है, लोगों का मानना है कि ये कलाकृतियां व मूर्तियां उस समय की है जब शिल्पकला का विकास आरंभ हुआ था, जिसे प्राचीन शिल्पकारों द्वारा काफी आकर्षण ढंग से पत्थरों को उकेर कर विभिन्न कलाकृतियां बनायी गई है।

इससे प्राचीन भारतीय सभ्यता की एक समृद्ध परम्परा का भी पता चलता है।

खुदाई के दौरान वहां भगवान् महावीर जैन, नटराज की तथा अन्य मूर्तियां, कलश तथा मंदिर आदि पाये गये हैं। सभी कलाकृतियां सफेद रंग के पत्थरों से बनी है इससे यह प्रतीत होता है कि यहां पूजा-पाठ करने की परम्परा तथा मूर्ति निर्माण की कला भी उस समय प्रचलित हो चुकी थी।

मूर्तियों को देखकर ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि ४६८ ई. पूर्व भगवान् महावीर के अवसान के पश्चात् वहां जैन धर्मावलंवियों की बस्ती रही होगी। पायी गयी मूर्तियां मंदिर के तीन कमरों में विभाजित है, जिसकी दीवारों की चौड़ाई ढ़ाई फीट हैं, मंदिर के दो कमरे ८-८ फीट लंबे चौड़े हैं, जबकि तीसरे कमरों की लम्बाई चौड़ाई १२-१२ फीट है। मंदिर का निर्माण भी पत्थरों से ही किया गया है।

खुदाई के दौरान पायी गयी कलाकृतियों में एक बड़ा तथा दो छोटे कलश भी हैं, जो देखने में काले पत्थर से बनाये प्रतीत होते हैं, बड़ा कलश

साढ़े चौबीस ईंच का है जबकि छोटा कलश क्रमशः साढ़े १३ ईंच तथा २० ईंच का है। कलशों को पान पत्तों के आकार से सजाया गया है, जो काफी आकर्षण है, वहीं महावीर की सिरविहीन मूर्ति की ऊंचाई साढ़े चौतीस इंच है। भगवान महावीर मूर्ति के अगल-बगल पत्थर पर बारह-बारह मूर्तियां भी जड़ी हुई है, जो मूर्ति के ऊपर से नीचे तक छोटे-छोटे घरों में हैं, प्रत्येक घर में दो-दो मूर्तियां हैं। महावीर मूर्ति के दोनों ओर दो अन्य मूर्तियां भी है, खुदाई के दौरान नक्काशी तथा छोटी-छोटी मूर्तियों के अवशेष भी पाये गये हैं। खुदाई स्थल के २०० मीटर की दूरी पर पूरब की ओर एक टापू हैं, संभावना है कि वहां खुदाई करने पर कुछ पाया जा सकता है। खुदाई स्थल से कुछ दूरी पर एक तालाब है, जिसे वहां के ग्रामीण जलोहरि तालाब कहते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि उक्त तालाब का पानी कभी सूखता नहीं है, जबकि तालाब में पानी की मात्रा कम ही रहती है।

खुदाई स्थल पर पुरुलिया जिला प्रशासन ने लोगों के प्रवेश पर रोक लगा दी है तथा पहरे के लिये पुलिस को तैनात कर दिया गया है। जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी घटनास्थल का दौरा कर चुके हैं तथा जिला प्रशासन ने इसे पुरातत्व विभाग के हवाले कर दिया है।

इस संबंध में पुजारी खेपु राय का कहना है कि कुशटांड गांव निवासी खादू राय के १५ वर्षीय पुत्र तारापद राय, जो पहले चरवाहा का काम अपने फूफा के घर भोजूडीह में करता था।

उक्त लड़का तारपद राय खुदाई के तीन-चार दिनों पहलें अपने घर कुसटांड आया और गोजोजाम देखने के लिए चला गया। उन्होंने कहा कि गोजोधाम से घर आने पर उसने ग्रामीणों को गोजोधाम के नीचे मिट्टी मंदिर होने की बात कहने लगा। परन्तु लोगों ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया इसके बाद उसने स्वयं दो-चार साथियों को लेकर गोजोदाम में खुदाई करने के लिये चला गया। जहाँ खुदाई के दौरान कलश पाया। उसके बाद उसकी चर्चा पुरे कुसटांड गांव में फैली और काफी संख्या में ग्रामीणों ने खुदाई करना शुरु कर दिया जिसमें प्राचीन कलाकृतियां मंदिर तथा मूर्तियां मिली।

लोगों का कहना है कि प्राचीन कलाकृतियों के मिलने के बाद इसकी चर्चा पूरे जिले में होने लगी तभी जिला प्रशासन को इसकी संख्या मिलने पर प्रशासन ने खुदाई स्थल जाकर खुदाई बंद करा दी तथा वहां पहरे पर पुलिस तैनात कर दिया।

अ. भा. जैन श्वे. तीर्थ रक्षा कमेटी के, पदाधिकारियों को जाकर उक्त स्थल को देखकर उक्त स्थल को पुनः खुदाई करने का अनुरोध विभाग से करना चाहिए।

----- ✸ -----

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-355-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 464-2783

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (Resi) 352-8387/9885

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street. Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129. Rasbehari Avenue. Kolkata, Ph: 464-1186.

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Kolkata - 700 068
Ph: 472-0610

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street Kolkata - 700 001,
Ph: 235 2759 Fax: 033-252902

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

DHARAM CHAND SARAOGI
'Jain House' 8/1 Esplanade East
Kolkata - 700 069

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHREE SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and cables
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110 043, Ph: (O) 501-6527
(Resi) 545-3415, 542-3304
Mobile: 9811075330

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

H. R. ELECTRONICS

Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens. English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA

12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR

30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY

Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes. 18/C Sukeas Lane.
Kolkata - 700 001. Phone : 242-2345. 242-4461

D. K. SYNTHETICS

Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS

House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street. 1st Floor, Kolkata - 700 001
Phone : 235 7312. (Shop) 230 1180 (Resi) : 241 6831

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Kolkata - Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Kolkata - 700 073

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Ph : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITH NATURE

Head Office: 113 Park Street. 3rd floor, South Block, Calcutta-700016 Ph:(033)245-7562. Registered Office: Subhash House. F-27/2 Okhla Industrial area: Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Lisor Road. Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metre, no less.

Building a floating pumping station on the fierce of Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproff Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला

१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़

कोलकाता – ७०० ००७

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीस पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्चार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी

कोलकाता

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1.	Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
6.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Proce : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00
5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani Panchdasi.	Price : Rs.	100.00

8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavir Aur Prajatantra	Pricé : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyankarna	Price : Rs.	

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Samskriti Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Satya Ranjan Bandyopadhyay Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	
4.	Samata Darshan Aur Vyavhar	Price : Rs.	
5.	Jain Dharma Aur Shasnavali	Price : Rs.	50.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi
******
We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)
******
Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

**Offices at all major Indian Ports & New Delhi &
Bangalore.**

Tech/W.B /R.N.P.-45
Vol. XXV No. 8 TITTHAYARA November 2001
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225